राज्य परिशिष्ट 4

(यीशु मसीह के दृष्टान्त)
सकेत फाट्क और बड़े भोज का दृष्टांत

सकेत फाट्क का दृष्टांत मत्ती 7:13-14
और लूका 14:15-24 में बड़े भोज का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त के विषय में है।

क. सकेत फाट्क

पढ़ें। मत्ती 7:13-14।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टांत की कहानी अलंकारिक भाषा में बताई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

कहानी को एक प्रोत्साहन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रोत्साहन संसार के सभी लोगों के लिए है। उन्हें प्रोत्साहित किया गया है कि सकेत फाट्क से प्रवेश और संकरे मार्ग का अनुसरण करें, और चौड़े फाट्क और सरल मार्ग का अनुसरण न करें। संकरा मार्ग और चौड़ा मार्ग दोनों की मंजिल निश्चित है। यह जीवन की वास्तविकता है।

सकेत फाट्क। यह चक्रद्वार की याद दिलाता है, जो एक समय में एक ही व्यक्ति को स्वीकार करता है।

संकरा मार्ग। यह दो ऊँची चट्टानों के बीच एक कठिन मार्ग से मिलता-जुलता है, जो यात्रियों को दोनों ओर से घेरता है।

चौड़ा फाट्क। यह इतना चौड़ा है कि एक ही समय में अपने सभी समान के साथ लोगों की भीड़ इसमें प्रवेश कर सकती है। यह ऐसा है कि मानों इसके ऊपर एक चिन्ह् लिखा है कि, ''जितने लोग संभव हों सबका स्वागत है!''

सरल मार्ग। यह एक चौड़े और सरल मार्ग के समान दिखाई देता है जिसमें कई यात्री यात्रा कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मानों इस मार्ग के साथ यह चिन्ह् है जो कहता है, ''जहां आप चाहें यात्रा करें।'' और जितनी जल्दी हो सके यात्रा करें।''

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का समायोजन दृष्टांत को बताने के अवसर या दृष्टांत को बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की काहनी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की काहनी के *बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती अध्याय 5–7 में पाया जाता है।
पहाड़ी उपदेश में यीशु ने *परमेश्वर के राज्य के नागरिकों,* उनकी आशीषों और संसार के साथ उनके संबंधों का वर्णन किया (मत्ती 5:1–16) और उस धार्मिकता का जो राजा मसीह यीशु, एक और उन्हें प्रदान करते हैं और दूसरी और उनसे उसकी मांग करते हैं (मत्ती 5:17–7:12)। अंत में वह उन सभी लोगों से कहते हैं जिन्होंने उनका संदेश उस समय या बाद में सुना, कि परमेश्वर के राज्य में सकेत फाटक से प्रवेश करें (मत्ती 7:13–14)। यदि वे पहले ही ऐसा कर चुके हैं, तो वे लागातार उस मार्ग पर बने रहें जिस पर फाटक उन्हें स्वीकार करता है। वह विशेष रूप से उन्हें झूठे भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं के विरूद्ध चेतावनी देते हैं और अंत में वह उन दोनों मंजिलों में फर्क बताते हैं जिन तक वे दो मार्ग पहुँचाते हैं (मत्ती 7:15–27)।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 7:13–14 में निहित है।
इसमें प्रोत्साहन का एक रूप है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण।
वास्तव में यह इसके प्रोत्साहन में निहित किया गया है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए नहीं किया था। प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक श्रेय नहीं देना चाहिए।
चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

दो फाटक और दो मार्ग। ''फाटक'' जीवन में महत्वपूर्ण चुनाव का प्रतिनिधित्व करता है और इसके बाद ''मार्ग'' इसका प्रतिनिधत्व करता है कि एक व्यक्ति अपने जीवन को किस प्रकार जीता है। इसलिए दोनों फाटक और मार्ग इस दृष्टांत में प्रासंगिक विवरण है।

दो प्रकार के यात्री। ''बहुत से'' और ''थोड़े'' कई बार बाइबल में पाए जाते हैं और यह निश्चित रूप से प्रासंगिक विवरण हैं।

दो मंजिलें। ''विनाश'' और ''जीवन'' भी अक्सर बाइबल में पाए जाते हैं और बहुत ही प्रांसगिक विवरण हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांतों की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के हर एक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 7:13-14 में सकेत फाटक का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त'' के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''जीवन में किसी व्यक्ति के द्वारा किया गया प्रारंभिक चुनाव इस पृथ्वी पर उसके जीने के तरीके और साथ ही साथ उसकी अंतिम मंजिल को निर्धारित करता है!'' सकेत फाटक से प्रवेश करने और चौड़े फाटक से प्रवेश न करने के दो गुना प्रोत्साहन में दो अधीनस्थ तर्क शामिल हैं। पहले स्थान में संकरे और संकीर्ण की अपेक्षा चौड़े, सरल और पहुँच में आसान को पंसद करना स्वभाविक है। दूसरे स्थान में थोड़े लोगों के बजाय भीड़ का अनुसरण करना स्वभाविक है। इसलिए, सवधान रहें कि आप क्या चुनते हैंः आप किस फाटक से

परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर की शर्तों पर प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। कोई भी स्वयं की शर्त पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करता (स्वयं व्यवस्था को बनाए रखना, स्वयं के भले काम या स्वयं का धर्म)! परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त सकेत फाटक से प्रवेश करना है और इसके बाद संकरे मार्ग में चलना है। बाइबल से हम जानते हैं कि ''सकेत फाटक'' केवल यीशु मसीह में विश्वास और उनके पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य को ही संदर्भित कर सकता है (लूका 10:25-26; यूहन्ना 10:9; 14:6; प्रेरितों 4:12)। संदर्भ से हम जानते हैं कि ''संकरा मार्ग'' पहाड़ी उपदेश को संदर्भित करता है, अर्थात उसे राज्य की संस्कृति के अनुसार परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में रहना चाहिए (मत्ती अध्याय 5-7)। एक व्यक्ति का अनुग्रह के द्वारा विश्वास से उद्धार होने के बाद उसे पहाड़ी उपदेश के अनुसार चलना चाहिए (मत्ती अध्याय 5-7)। परमेश्वर के राज्य के लोग सकेत फाटक से प्रवेश करते हैं और इसके बाद संकरे मार्ग पर चलते हैं। इस प्रकार यह यीशु मसीह में विश्वास के साथ शुरू होता है और यह सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है जो कि एक मनुष्य कभी ले सकता है।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता

है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें। ***खोजें और चर्चा करें।*** इसमें से प्रत्येक लेखांश इस दृष्टांत के साथ कैसे तुलना करता है?

(1) कौन सा पहले हैः मार्ग या फाटक?

पढ़ें लूका 13:23-30

क्या ये दो मार्ग अंत में दो फाटकों तक ले जाते हैं? या फिर ये दो फाटक जीवन में दो अलग मार्गों में ले जाते हैं? क्या एक व्यक्ति दोनों में एक फाटक में प्रवेश करने के लिए किसी एक मार्ग का चुनाव करता है? या फिर वह किसी एक फाटक में प्रवेश करता है कि वह एक मार्ग को स्वीकार करे? यह प्रस्तुतिकरण कि मार्ग पहले आते हैं और फाटक बाद में, मसीही और *मसीही कलाकारों* के बीच काफी लोकप्रिय है।

कुछ मसीही लूका 13:23-30 से अपील करते हैं यह साबित करने के लिए कि मार्ग पहले आता है और फाटक तक ले जाता है। यीशु कहते है, ''सकेत द्वारा से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।'' हालाँकि, लूका 13:23-30 की शब्दावली और संदर्भ निश्चित रूप से मत्ती 7:13-14 की शब्दवली और संदर्भ से अलग है। मत्ती 7 में वह ''एक फाटक'' (यूनानीः पूले) और ''एक मार्ग'' (यूनानीः होदोस), की बात करते हैं, जबकि लूका 13 में वह किसी की भी बात नहीं करते, लेकिन केवल ''एक द्वार'' (यूनानीः थुरा)। मत्ती 7 में यीशु परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने और वर्तमान समय में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में जीवन की बात करते हैं। हालाँकि, लूका 13:23-30, में, वे यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक दृढ़ता और परमेश्वर के राज्य में अंतिम प्रवेश (अंत का समय) की बात करते हैं (मत्ती 25:10)।

मत्ती 7 में यीशु ने दोनों मार्गों का उल्लेख करने से *पहले* दोनों फाटकों का उल्लेख किया है। विषय वाक्य मार्ग और फाटक के बीच घनिष्ठ संबंध पर जोर देता है। लेकिन यह ''फाटक या मार्ग'' नहीं कहता, जैसा कि इनका क्रम प्रतिवर्ती है। विषय वाक्य स्पष्ट रूप से कहता है ''फाटक *और* मार्ग'', जो दर्शा रहा है कि फाटक मार्ग से *पहले* आता है!

मत्ती 7 में, फाटक में प्रवेश करने के द्वारा यीशु मृत्यु या अपने दूसरे आगमन के बारे में नहीं सोच रहे, लेकिन उस महत्वपूर्ण चुनाव के बारे में जो कि एक व्यक्ति अपने जीवन में इसी समय कर सकता है। एक व्यक्ति का आरंभिक चुनाव उसके पृथ्वी पर जीवन जीने के तरीके और साथ ही साथ उसकी अंतिम मंजिल को निर्धारित करेगा! ''फाटक'' जीवन में आरंभिक चुनाव का प्रतिनिधित्व करता है और ''मार्ग'' यह चुनाव करने के बाद व्यक्ति के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है।

(2) अंततः कितने लोग उद्धार पाएंगे?

पढ़ें मत्ती 22:14; रोमियों 9:27।

यीशु कहते हैं, ''बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए *थोड़े* हैं'' (मत्ती 22:14)। पौलुस कहता है, ''चाहे इस्त्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बराबर हो, तौभी उनमें से *थोड़े* ही बचेंगे'' (रोमियों 9:27)। बाइबल में अन्य लेखांश यह स्पष्ट करते हैं कि बहुत से लोग इस जीवन में गलत

प्रारंभिक चुनाव करते हैं। वे चौड़े फाटक और सरल मार्ग का चुनाव करते हैं, यह एहसास होने से पहले कि यह उन्हें उनके विनाश की ओर ले जाता है।

फिर भी, बाइबल यह स्पष्ट करती है कि ''थोड़े'' लोग जो अंततः उद्धार पाएंगे (धर्मी ठहराए जाएंगे) उनकी संख्या बहुत होगी! उद्धार पाए हुए लोगों की *संख्या अनगिनत* होगी! ''इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है'' (प्रकाशितवाक्य 7:9)!

(3) इस संसार में दो जीवन-शैली क्या हैं?

पढ़ें यूहन्ना 8:34; यशायाह 57:20-21

बहुत से लोग सोचते हैं कि जो लोग चौड़े फाटक से प्रवेश और सरल मार्ग से यात्रा करते हैं उनके पास असीमित स्वतंत्रता और खुशी होती है, जबकि जो लोग सकेत फाटक से प्रवेश करते और संर्कीण मार्ग से यात्रा करते हैं, जिसमें वे कई कानूनों और व्यवस्था से प्रतिबंधित हैं, बहुत उबाऊ होगा और उन्हें बहुत दुःखी करेगा!

ऐसा सोचने वाले लोग केवल स्वयं को धोखा देते हैं। वास्तव में उनकी तथाकथित स्वतंत्रता और खुशी बहुत ही सतही है। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि जो लोग पाप में जीवन यापन करते हैं वे ''पाप के दास'' हैं! ''दुष्ट तो लहराते हुए समुद्र के समान हैं जो स्थिर नहीं रह सकता; और उसका जल मैल और कीच उछालता है। दुष्टों के लिए शांति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यही वचन है'' (यशायाह 57:20-21)। सरल मार्ग से यात्रा करने वाले लोग वास्तव में जंजीरों में जकड़े कैदियों के समान हैं जो दूसरों के लिए गुलामी का काम करते हैं।

यद्यपि सकेत फाटक से प्रवेश करना और संकरे मार्ग से यात्रा करने में स्वयं का त्याग करना, कठिनाई और संघर्ष, दर्द और कष्ट हैं, विशेषकर क्योंकि पापमय स्वभाव पर अभी पूर्णतः विजय प्राप्त नहीं कि गई है, भजन 119:165 सिखाता है, ''तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शांति होती है (बाइबल में परमेश्वर का प्रकाशन); और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती'' (1पतरस 1:8-9)।

थोड़े लोग जो सकेत फाटक से प्रवेश करते हैं वे ''चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते; सताए तो जाते हैं, पर त्यागे नहीं जाते, गिराए तो जाते हैं, पर नष्ट नहीं होते'' (2कुरिन्थियों 4:8-9)। वे ''भरमानेवालों जैसे मालूम होते हैं, तौभी प्रसिद्ध हैं; अनजानों के सदृश हैं, तौभी प्रसिद्ध हैं; मरते हुओं के समान हैं, और देखो जीवित हैं; मारखानेवालों के सदृश हैं, परन्तु प्राण से मारे नहीं जाते; शोक करनेवालों के समान हैं, परन्तु सर्वदा आंनद करते हैं; कंगालों के समान हैं, परन्तु बहुतों को धनवान बना देते हैं; ऐसे हैं जैसे उनके पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ रखते हैं'' (2कुरिन्थियों 6:8-10)। उनका पल भर का हल्का सा क्लेश उनके लिए अनंत महिमा उत्पन्न करता जाता है जिसके सामने यह कठिनाईयाँ कुछ भी नहीं हैं (2कुरिन्थियों 4:17; रोमियों 8:18)!

सकेत फाटक से प्रवेश करने वाले थोड़े लोग, ''यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए सब कुछ छोड़ देते हैं''। यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं जिसने मेरे और सुसमाचार के

लिए घर या भाई या बहिनों या माता या पिता या बाल–बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुणा न पाए, (घरों, भाईयों, बहिनों, माताओं, बच्चों और खेतों को– पर सताव के साथ) और परलोक में अंनत जीवन'' (मरकुस 10:28–30)!

(4) इस संसार में जीवन के बाद दो मंजिलें कौन सी हैं?

पढ़ें मत्ती 3:12; 25:46; 2थिस्सलुनीकियों 1:8–9; प्रकाशितवाक्य 14:9–11

दो मंजिले या तो अनंत दंड या अनंत जीवन है। वे लोग जिन्होंने चौड़े फाटक से प्रवेश करने का चुनाव किया और सरल मार्ग में चले वे विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। ''विनाश'' (यूनानीः अपोलिया) का अर्थ ''सर्वनाश'' नहीं है, लेकिन इस अर्थ है ''अनंत नरकदंड और सजा'' है, मत्ती 25:46 के सामान (यूनानीः कोलासिस)। वे लोग जिन्होंने सकेत फाटक से प्रवेश करने का चुनाव किया और संकरे मार्ग में चले, वे जीवन के मार्ग पर हैं। स्वयं का इंकार करना वर्तमान समय में बहुतायत को और अनंतकाल में परमेश्वर के साथ जीवन को लाता है। ''जीवन'' (यूनानीः जोए) का तात्पर्य वर्तमान समय में परमेश्वर के साथ मसीह में उद्धार और संगति है, और भविष्य में मसीह के दूसरे आगमन के बाद नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में जीवन है। और इसमें परमेश्वर की सभी आशीषें हैं जो परमेश्वर के साथ संगति से प्राप्त होती हैं।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश (पाठ) क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या बनना या करना सिखाया?

(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्तें।

''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश'' करने का अर्थ है ''उद्धार पाना''। यीशु सिखाते हैं कि उद्धार पाना एक ओर तो बहुत आकर्षक है, वहीं दूसरी ओर बिल्कुल भी आसान नहीं है! प्रवेश द्वारा संकरा होना चाहिए और उसे ढूढ़ा जाना चाहिए! इसका मार्ग संकार है और संकीर्ण महसूस होता है। संकरा फाटक एक व्यक्ति के जीवन के आरंभिक चुनाव का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य के दृष्टिकोण से यह ''प्रारंभिक रूपांतरण'' है और परमेश्वर के दृष्टिकोण से यह ''धर्मी ठहरना'' है। संकरा मार्ग यीशु मसीह पर विश्वास करने का चुनाव करने के बाद मसीही जीवन–शैली का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य के दृष्टिकोण से इसे ''दैनिक रूपांतरण'' कहा जाता है, और परमेश्वर के दृष्टिकोण से इसे ''शुद्धिकरण'' कहा जाता है। इसी प्रकार चौड़ा फाटक ''रूपांतरित न होने की इच्छा'' का प्रतिनिधित्व करता है और सरल मार्ग ''आत्म–भोग के जीवन'' का प्रतिनिधित्व करता है।

सकेत फाटक जीवन की ओर ले जाने वाले मार्ग की शुरूआत में खड़ा है। और संकरा मार्ग जीवन के मार्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो ऊँची चट्टानों और गहरी घाटियों के बीच से होकर गुजरता है, जो हर तरफ एक दूसरे से टकराता है। सकेत फाटक से प्रवेश करने के लिए, एक व्यक्ति को स्वयं को बहुत सी चीजों से दूर रखने की आवश्यकता है, जैसे सांसारिक वस्तुओं की नाश कारने वाली अभिलाषाँए, क्षमा न करने वाली आत्मा, स्वार्थीपन और स्वयं की धार्मिकता (इब्रानियों 12:1)। एक व्यक्ति के सकेत फाटक से प्रवेश करने के बाद भी, उस व्यक्ति का पुराना स्वभाव, बुरे चरित्र और बुरी आदतों को दूर करने में बलावा करता है। इस पुराने स्वभाव पर पूर्णरूप से विजय प्राप्त नहीं कि गई है इसलिए जीवन भर, शारीरिक मृत्यु तक, पुराने स्वभाव और नए स्वभाव के बीच एक कड़वा

संघर्ष जारी रहता है (रोमियों 7:14:25; गलातियों 5:17)। इसलिए सकेत फाटक ''स्वयं का इंकार, अपना क्रूस उठाना और यीशु के पीछे चलने का प्रतिनिधित्व करता है'' और इसलिए संकरा रास्ता ''लगातार स्वयं का इंकार, हर दिन अपना क्रूस उठाना और हर दिन यीशु का अनुसरण करने का प्रतिनिधित्व करता है'' (लूका 9:23)।

लेकिन पूर्ण विजय सुनिश्चित है, क्योंकि इस व्यक्ति ने सकेत फाटक को ढूढ़ लिया है और उससे प्रवेश किया है। उसने पापियों के मार्ग को धर्मियों के मार्ग से बदल लिया है (भजन 1)। सकेत फाटक से प्रवेश करने का सचेत निर्णय ''प्रारंभिक रूपांतरण और धर्मी ठहरने'' का प्रतिनिधित्व करता है और संकरे मार्ग से यात्रा करना ''प्रतिदिन आज्ञा पालन और शुद्धिकरण'' का प्रतिनिधित्व करता है।

(2) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का परिणाम।

पहाड़ी उपदेश सिखाता है कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना प्रतिकूल और अनुकूल दानों परिस्थितियों और परिणामों के साथ है। अनुकूल परिणाम यह है कि जो लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं वे धन्य हैंः वे पृथ्वी के अधिकारी हैं, वे दया प्राप्त करते हैं, परमेश्वर को देखते हैं आदि। प्रतिकूल परिणाम यह हैं कि जो लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं वे साताए जाएँगे और बदनाम किये जाएँगे। उन पर कुछ दायित्वों का बोझ हैः उन्हें एक ऐसी धार्मिकता का अभ्यास करना है जो फरीसियों की धार्मिता से बढ़कर है; उन्हें अपने शत्रुओं से प्रेम करना है और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करनी है; उन्हें पाखंड़ी नहीं होना चाहिए और विवेकशील होना चाहिए, आदि। इस प्रकार कि बातें *प्रतिकूल* हैं, क्योंकि यह लोगों की स्वभाविक प्रवृत्तियों से टकारती हैं जैसे आधा–अधूरापन, क्रोध करना, दूसरे लिंग का सम्मान करने में अनुशासन की कमी, बदला लेना आादि। (मत्ती 5)।

ख. बड़ा भोज

पढ़ें लूका 14:15–24

1. दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

यह कहानी विवाह के भोज के दृष्टांत के समान दिखाई देती है, लेकिन उसके समानांतर नहीं है। यीशु ने अक्सर दृष्टांत कहे। कई बार उन्होंने एक ही दृष्टांत अलग–अलग परिस्थितियों के बारे में कहा, जैसे कि खोई हुई भेड़ का दृष्टांत (मत्ती 18; लूका 15)। कई बार उन्होंने समान दृष्टांत अलग अलग परिस्थितियों के बारे में कहे, जैसे विवाह के भोज का दृष्टांत और बड़े भोज का दृष्टांत। विवाह का भोज एक राजा द्वारा विवाह के भवन में दिया गया और बड़ा भोज एक घर के स्वामी द्वारा उसके घर में दिया गया औपचारिक भोज था।

पहला निमंत्रण। वचन 16 दर्शाता है कि सब ने भोज का पहला निमंत्रण स्वीकार किया। इसमें किसी भी ऐसे व्यक्ति का उल्लेख नहीं है जिसने आने से इंकार किया हो।

दूसरा निमंत्रण। भोज कि शुरूआत से कुछ समय पहला मेजबान ने एक सेवक को आमंत्रित लोगों को बुलाने के लिए भेजा, क्योंकि भोज की सारी तैयारियाँ पूरी हो चुकि थी। यह इस दूसरे निमंत्रण

के जवाब में था कि आमंत्रित मेहमान सभी प्रकार के कमजोर बहाने बनाने लगे। इन सभी लोगों ने आने का वादा किया था लेकिन अब अपने पहले वादे से पीछे हट गये। भोज के लिए जो तैयारी की गई थी, उसे देखते हुए इस तरह के वादे को तोड़ने को अक्षम्य अपराध माना जाता था। यह सबित हुआ कि आमंत्रित मेहमान निष्ठाहीन थे! उन्होंने ''हाँ'' कहा, जबकि उनका मतलब ''न'' था।

इसके अलावा, इनके बहाने उथले और दिखावटी थे। कोई खेत को बिना पहले देखे नहीं खरीदेगा! और यदि पहले खरीदा भी है, तो बाद में इसे देखने के लिए पर्याप्त समय रहा होगा। इसी प्रकार कोई भी बिना परखे महंगे बैलों को नहीं खरीदेगा! और कोई भी जिसका विवाह हुआ हो इस प्रकार के रमणीय भोज से दूर रहने के लिए बहाना नहीं बनाएगा चाहे वह फिर विवाह के पहले वर्ष के दौरान सभी सैन्य, नागरिक और धार्मिक कर्तव्यों से मुक्त हो गया हो (व्यवस्थाविवरण 24:5)!

तीसरा निमंत्रण। भोज को बंद नहीं किया गया। यह पहले से निर्धारित किये गये समय पर ही होने जा रहा था! इसलिए मेहमानों की कमी को पूरा करने के लिए, सेवक को बाहर भेजा जाता है कि वंचित लोगों को आमंत्रित करे। यहां तक कि वह उन्हें लाने का आदेश देता है, अर्थता, उन्हें हाथ पकड़ के *लाए* और भोज के भवन तक उनकी अगुवाई करे, क्योंकि उनमें से कुछ घायल, लंगड़े और अंधे थे।

अंत में, वह आदेश देता है कि उन्हें आने के लिए विवश किया जाए, अर्थात उन्हें प्यार से मानाने के लिए मजबूर करें। यह आवश्यक था क्योंकि कई मेहमान पूरी तरह से अयोग्य महसूस करते थे! इस प्रकार भोज का भवन पूर्णरूप से भर गया, जैसा कि मेजबान ने इरादा किया था।

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 14:1-15 में पाया जाता है।

यीशु एक प्रमुख फरीसी के घर में भोजन कर रहे थे। उन्होंने यह सिखाया कि, ''जब तू भोज करे (रात्रि का भोजन या औपचारिक भोजन), तब अपने मित्रों या भाई या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला, कहीं ऐसा न हो कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा बदला पूरा हो जाए।

जब तू भोज करे तो कंगालों, टुण्डों, लगंड़ों और अन्धों को बुला। तब तू धन्य होगा, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे ''धर्मियों के जी उठने पर'' इसका प्रतिफल मिलेगा (लूका 14:12-14)। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें कभी अपने मित्रों और परिवार के लोगों को आमंत्रित नहीं करना चाहिए। लेकिन इसका अर्थ यह है कि अपने समाझ में वंचित लोगों को निमंत्रित करना कहीं अधिक धन्य है।

उस प्रमुख फरीसी के घर में मेज पर बैठे मेहमानों में से एक ने कहा, ''धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा'' (लूका 14:15)। तब यीशु ने उसे और वहाँ बैठे सभी लोगों को इंगित करने के लिए बड़े भोज का दृष्टांत कहा कि यह महत्वपूर्ण नहीं हैं कि तुम्हें आमंत्रण मिला या नहीं,

लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि क्या तुम उस आमंत्रण का प्रत्युत्तर देते हो! धन्य है वह जो आमंत्रण को स्वीकार करता है। जो इसे अस्वीकार करते हैं वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते!

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 14:16-24 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 14:24 में निहित है।

जिस किसी को भी निमत्रंण भेजा गया था और उसने अस्वीकार किया, वह कभी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा। केवल वही परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे जिन्होंने निमंत्रण स्वीकार किया और उसका प्रत्युत्तर दिया।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत में कहानी का कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें। आवश्यक या प्रासंगिक विवरण को संदर्भ और बाइबल में समानांतर लेखांश से निर्धारित किया जाना चाहिए, क्योंकि यीशु ने किसी भी विवरण की व्याख्या नहीं की।

बड़ा भोज। यह एक प्रासंगिक विवरण है। विवाह के भोज के समान, बड़ा भोज मसीह के दूसरे आगमन में परमेश्वर के राज्य की पूर्णता का प्रतीक है (प्रकाशितवाक्य 19:7)। यह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर रहने के आनंद का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ सभी लोग मसीह में परमेश्वर के राज्य (शासन) को स्वीकार करेंगे। यह एक विशाल भोज के भवन में भोजन से भरी मेंजों पर सोफे पर बैठे मेहमानों के रूप में चित्रित किया गया है जो कि प्रकाश से भरा है। और मेजबान के साथ और एक दूसरे के साथ आनंद का वार्तालाप होता है। इस प्रतिनिधित्व के तत्वों को निम्न लेखाशों में पाया जा सकता हैः भजन 23:5; यशायाह 25:6; मत्ती 8:11-12; 22:1-14; 26:29; प्रकाशितवाक्य 3:20; 19:9।

सवाल यह है, ''इन तत्वों की व्याख्या शाब्दिक रूप से किस हद तक और अंलकारिक रूप से किस हद तक की जानी चाहिए''? उत्तर यह है, कि प्रतीकवाद दृष्टांतों में प्रमुख है, जिसका अर्थ यह नहीं है कि प्रतीक अवास्तविक है। ''नया यरूशलेम और नई पृथ्वी और नया स्वर्ग'' बहुत वास्तविक हैं! वास्तविकताएँ प्रतीकों के शाब्दिक अर्थ से कहीं अधिक ऊँची, समृद्ध और अधिक सुदंर हैं! उद्धार पाए हुओं की आशीषें और आनंद परमेश्वर के राज्य में बहुत वास्तविक हैं! लेकिन उन विवरणों के अर्थ के बारे में अटकलें लगाना बेकार है, जिन पर बाइबल स्वयं बहुत कम या कोई प्रकाश नहीं डालती।

निमंत्रण। सभी दृष्टांतों में यह आवश्यक है कि हम उस केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश को समझे जो यीशु मसीह सिखाते हैं। इस दृष्टांत में सवाल यह है, ''क्या मैंने वास्तव में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का निमंत्रण स्वीकार किया है?'' क्या मेरे जीवन से यह पता चलता है कि मैंने निमंत्रण को स्वीकार किया है और मैं उस धन्य अनुभव के अपने मार्ग पर हूँ, और यहाँ और अभी उस वास्वविकता का पूर्वानुभव ले रहा हूँ?'' दृष्टांत का परिचय (वचन15) और निष्कर्ष (वचन 24) दोनों इस सवाल की ओर संकेत करते हैं! वास्तव में महत्वपूर्ण यह नहीं है कि आपको निमत्रंण मिला या नहीं बल्कि क्या आपने निमंत्रण का प्रत्युत्तर उस प्रकार दिया या नहीं जिस प्रकार परमेश्वर चाहते हैं और अपेक्षा करते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 14:15-24 में बड़े भोज का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिए शर्त" के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "अनुग्रह के द्वारा विश्वास से उद्धार के परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण निमंत्रण को अस्वीकार करने का परिणाम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर के राज्य के अंतिम प्रगटिकरण में आशीषों और आनंद से बाहर रखा जाना होगा।"

परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर की शर्तों पर प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य के मूलभूत चरित्रगुणों में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग परमेश्वर के निमंत्रण को स्वीकार करते हैं और उसका प्रत्युत्तर देतें हैं और जब उन्हें आमंत्रित किया जाता है तो वे आते हैं। वे उसका विरोध नहीं करते जब परमेश्वर का सेवक उनका हाथ पकड़ कर अंदर आने में उनकी अगुवाई करता है। वे परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण निमंत्रण पर संदेह नहीं करते जब प्रेम का अनुनय बल उन्हें अंदर लाता है।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की तुलना दो पुत्रों के दृष्टांत, दृष्ट किरायेदारों और मत्ती 21-22 में विवाह के भोज के दृष्टांत से किस प्रकार की जा सकती है?
ध्यान दें। बड़े भोज का दृष्टांत, उन अन्य तीन दृष्टांतों के समान ही, यह सिखाता है कि जो लोग पश्चयाताप नहीं करते और बदलते नहीं, वे यीशु मसीह के दूसरे आगमन में परमेश्वर के राज्य की पूर्णता में प्रवेश नहीं करेंगे।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश (पाठ) क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?
ध्यान दें।

(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त यह है कि परमेश्वर के निमंत्रण को स्वीकार करें अस्वीकार न करें।

स्वभाविक इस्त्राएल राष्ट्र पुराने नियम की अवधि के दौरन परमेश्वर की वाचा के लोग थे, लेकिन बहुत से यहूदियों ने परमेश्वर के निमंत्रण को अस्वीकार किया। परमेश्वर का अनुग्रहपूर्ण निमंत्रण फिर से दोहराया गया:

- पहले पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा
- अंत में मसीहा, यीशु मसीह के द्वारा
- और उनके प्रेरित।

इस कारण वे (स्वभाविक इस्त्राएल राष्ट्र में अविश्वासी) कभी भी अंतिम बड़े भोज का स्वाद नहीं ले पाएंगे अर्थात, वे नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण में कभी

प्रवेश नहीं कर पाएंगे! वे नाश होंगे! ''उन आमंत्रित लोगों में से कोई मेरे भोज को न चखेगा'' (लूका 14:24)।

हाँलाकि जब स्वभाविक इस्त्राएल राष्ट्र ने यीशु मसीह को अस्वीकार कर दिया था, परमेश्वर की योजना विफल या त्यागी नहीं गई!

- पुराने नियम की अवधि के दौरान, यहूदियों के बीच में (यशायाह 1:9; रोमियों 9:29) और अन्यजातियों के बीच में (यशायाह 56:3-8) वास्तविक विश्वासी रहे हैं।
- यीशु मसीह की पृथ्वी पर की सेवाकाई के दौरान यहूदियों में (उनके चेलें) और गैर-यहूदियों में (प्रेरितों 17:4; 1थिस्सलुनीकियों 1:6-10) वास्तविक विश्वासी रहे हैं।
- और यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक स्वभाविक इस्त्राएल का ''एक बचा हुआ भाग'' विश्वास से यीशु मसीह में आएगा और उद्धार पाएगा (1राजा 19:18; यशायाह 1:9; 10:22; मत्ती 22:14; लूका 5:31-32; 13:1-5; रोमियों 9:27; 11:5,11-24; मत्ती 24:34)।

(2) लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाने का तरीका प्रेम और अनुनय है।

सेवकों को *केवल* वंचितों को भोज के भवन में *आमंत्रित नहीं* करना था, बल्कि *उनका हाथ पकड़ कर उन्हें* भोज के भवन में भी *ले जाना था।* उनमें से बहुत से अपंग होने के कारण चल नहीं सकते थे। लागूकरण यह है, कि परमेश्वर के सेवकों को संसार के वंचित और विकलांग लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाने के लिए विशेष ध्यान रखना चाहिए।

इसके बाद सेवक ने मार्ग और गलियों में यात्रा करने वाले लोगों को भोज के भवन में आने के लिए *विवश* किया। उलझन यह है कि बहुत से लोग प्रवेश करने में स्वयं को अयोग्य महसूस करते हैं। यह विशेषरूप से उन लोगों को संदर्भित करता है जो मूलरूप से आमंत्रित नहीं किये गये थे, अर्थात अन्यजातियाँ। तथ्य यह है कि परमेश्वर ने न केवल अपने निमंत्रण को दोहराया, बल्कि वास्तव में गैर-यहूदी (अन्यजातियों) राष्ट्रों को इसमें शामिल करने के द्वारा इसे बढ़ाया जो बहुत महत्वपूर्ण है। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता पहले से ही जानते थे कि गैर-यहूदी राष्ट्रों को शामिल करने के द्वारा परमेश्वर का राज्य बढ़ाया जाएगा (उत्पत्ति 22:17-18; यशायाह 54:2-3; 56:3-8; 60:1-3; 65:1-3; भजन 72; दानिय्येल 2:34-35, 44-45)! पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता जो बात नहीं जानते थे वह यह थी, कि यह यीशु मसीह के विषय में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा होगा (नए नियम की अवधि के दौरान) और यह स्वभाविक इस्त्राएल राष्ट्र के साथ पूरी तरह से बराबरी पर होगा (इफिसियों 3:2-6)! यह यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर पूरा होना शुरू हुआ।

(3) इस दृष्टांत को सुनने या पढ़ने वाले लोगों से प्रत्युत्तर देने का आग्रह किया जाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश यह है कि किसी मनुष्य को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए निमंत्रण (सुसमाचार के प्रचार) का प्रत्युत्तर देना चाहिए और इसे स्वीकार करना चाहिए। इसलिए, यदि आपने अभी तब प्रत्युत्तर नहीं दिया, अभी यीशु मसीह को स्वीकार करें!

ग. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के विषय में इस दृष्टांत कि मुख्य शिक्षा और पाठ का सारांश बताएँ।

सिखाएँ। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त किसी व्यक्ति (या धर्म) द्वारा नहीं, बल्कि केवल बाइबल के परमेश्वर के द्वारा निर्धारित की जाती है।

(1) सकेत फाटक का दृष्टांत (मत्ती 7:13-14)।

अपने राज्य में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर की शर्त सकेत फाटक से प्रवेश करना और संकरे मार्ग से यात्रा करना है। *सकेत फाटक* परिवर्तित होने और यीशु मसीह में विश्वास करने के प्रारंभिक निर्णय का प्रतिनिधित्व करता है। संकीर्ण मार्ग यीशु मसीह में भरोसे और आज्ञापालन और पवित्र आत्मा के द्वारा शुद्धिकरण के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, जैसा कि पहाड़ी उपदेश में वर्णित है।

(2) विवाह के भोज का दृष्टांत (मत्ती 22:1-14)।

अपने राज्य में प्रवेश करने के विषय में परमेश्वर की शर्त यीशु मसीह की धार्मिकता का वस्त्र पहनना है, जो केवल परमेश्वर ही कर सकते हैं और परमेश्वर ही देंगे। विवाह का वस्त्र यीशु मसीह की धार्मिकता को दर्शाता है जो परमेश्वर प्रदान करते हैं और अनुग्रह के द्वारा हर उस व्यक्ति को प्रदान करते हैं, जो यीशु मसीह में विश्वास करता है।

(3) बड़े भोज का दृष्टांत (लूका 14:15-24)।

अपने राज्य में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर की शर्त परमेश्वर के निमंत्रण को स्वीकार करना है, इसे अस्वीकार करना नहीं। परमेश्वर के अनुग्रह और अपने विश्वास के द्वारा परमेश्वर के उद्धार के निमंत्रण को अस्वीकार करने का परिणाम, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर के राज्य की परिपूर्णता की आशीषों और आनंद से बाहर निकाला जाना होगा।